कुरआन को सीखने और सिखाने की फज़ीलत

मुहम्मद अज़हर मदनी

सहीह बुखारी में है अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः ''तुम में सबसे बेहतर वह है जो कुरआन को सीखे और उसको सिखाये'' (सहीह बुखारी ५०८७)

इस्लाम धर्म ने ज्ञान की प्राप्ति पर बहुत जोर दिया है यही वजह है कि हर ज़माने में ज्ञान की अहमियत सर्वमान्य रही है। पवित्र कुरआन की पहली सूरत में भी ज्ञान की अहमियत को उजागर किया गया है। पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता हैः

''पढ़ अपने रब के नाम से जिसने पैदा किया जिसने इन्सान को खून के लोथड़े से पैदा किया। तू पढ़ता रह तेरा रब बड़ा करूणा वाला है। जिस ने क़लम के ज़रिये (ज्ञान) सिखाया। जिस ने इन्सान को वह सिखाया जिसे वह नहीं जानता था। (सूरे अलक़ः१-५)

पवित्र कुरआन की तालीमात पर अमल करने के लिये उस के बारे में ज्ञान ज़रूरी है, इसी तरह हम लोग जिस हस्ती की इबादत करते हैं उसके बारे में भी ज्ञान रखना आवश्यक है और कुरआन में इस संसार के पालन हार के बारे में पूरा परिचय मौजूद है इसी तरह कुरआन पर अमल उसी सूरत में संभव है जब हम कुरआन के बारे में पूर्ण ज्ञान रखें इसलिये मां बाप की भी जिम्मेदारी बनती है कि वह अपने बच्चों को शुरू ही से उस की शिक्षा पर ज़्यादा से ज़्यादा ध्यान दें, कुरआन के अर्थ को समझने के लिये विश्वसनीय तफसीरों का अध्ययन करें और बच्चों को भी उस की व्याख्या के अध्यन के लिये प्रेरित करें।

आज अधिकांश लोग ऐसे हैं जो कुरआन की तिलावत तो करते हैं लेकिन कुरआन की तफसीर एवं व्याख्या को समझने की कोशिश नहीं करते। उपर्युक्त हदीस में कुरआन को सीखने की अहमियत को इसी लिये उजागर किया गया है कि कुरआन को स्वयं समझने की कोशिश करें और अपने परिवार, बाल बच्चों और अन्य लोगों को भी कुरआन की शिक्षाओं से अवगत करायें। यह मामूल बनाना चाहिये कि रोज़ाना बच्चों को कुरआन की तिलावत के साथ उसका अनुवाद और तफसीर को पढ़ कर सुनायें या बच्चों को स्वयं इसके अध्ययन का आदी बनायें। आम तौर से हम लोग दूसरे कामों के लिये वक़्त तो निकाल लेते हैं लेकिन कुरआन के अर्थ और उसके टीका को समझने के लिये गफलत और कोताही में वक़्त नहीं निकाल पाते यह हमारे लिये बहुत बड़ी विडंबना है।

कुरआन की तिलावत और पढ़ने की फज़ीलत के बारे में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिस शख्स ने किसी रात को सूरे बक़रा की आखिरी दो आयतों को पढ़ लिया वह (पूरी रात) उसकी सुरक्षा के लिये काफी हो गयीं। (सहीह बुखारी, सहीह मुस्लिम)

हज़रत उबय बिन काब रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अबू मुंजिर से दो बार प्रश्न किया :

''अल्लाह की किताब में कौन सी सबसे उत्तम आयात तुम को याद है? उन्होंने उत्तर में आयतुल कुर्सी का नाम लिया तो आप ने उनके सीने पर अपना हाथ रख कर फरमायाः ऐ अबू मुंज़िर! तुम को कुरआन का ज्ञान मुबारक हो।'' (सहीह मुस्लिम)

उपर्युक्त हदीसों से भी पवित्र कुरआन को पढ़ने, सीखने और उसकी तिलावत की फज़ीलत का पता चलता है। अफसोस कि कुरआन को सीखने और सिखाने के बारे में इतनी फज़ीलत के बावजूद हम लोग इस से गाफिल हैं। अल्लाह तआल से दुआ है कि वह हम सभी को कुरआन की तिलावत करने, सीखने, सिखाने और इसकी तालीमात पर अमल करने की क्षमता दे। आमीन

मासिक

इसलाहे समाज

मई 2022 वर्ष 33 अंक 05

शव्वाल 1443 हिजरी

संरक्षक

असग़र अ़ली 'सलफ़ी'

संपादक

मुहम्मद ताहिर

- ❑ वार्षिक राशि 100 रुपये
- ❑ प्रति कापी 10 रुपये

सम्पर्क

मासिक इसलाहे समाज (हिन्दी)
4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद
दिल्ली-110006
फोन : 23273407 फ़ैक्स: 23246613
RNI No. 53452/90

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद इरफान शाकिर ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ओर से एम.एस. प्रिन्टर्स, A-145 गली न० 8 चौहान बांगर, सीलमपुर, दिल्ली-53 से छपवा कर अहले हदीस मंज़िल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6 से प्रकाशित किया।

सम्पादक: मुहम्मद ताहिर

लेखक के विचारों से संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

1. कुरआन को सीखने और सिखाने ... 2
2. मौजूदा हालात और हम सब की ज़िम्मेदारियाँ 4
3. अल्लाह को हर्गिज़ न भूलें 7
4. मिस्वाक की फ़ज़ीलत 11
5. बच्चों से मुहब्बत और व्यवहार 14
6. हसद न करो 17
7. १६ वाँ आल इंडिया मुसाबक़ा.. 19
8. जमाअती खबरें 20
9. इस्लाम अम्न व शान्ति का झण्डावाहक 22
10. वक़्त बर्बाद न करें 24
11. बच्चों, गरीबों और गुलामों पर दया 25
12. अपील 28

ईमेल:-
Jaridahtarjuman@gmail.com
Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com

अब 'इसलाहे समाज' इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है

वेब साइट:- www.ahlehadees.org

मौजूदा हालात और हम सब की ज़िम्मेदारियाँ

मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी
अध्यक्ष, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

क्या मैं यह समझाने में कामयाब हो सकूँगा कि अत्याचार अत्याचार है और प्रकृति और शरीअत दोनों के कानून के एतबार से रददयोग्य और निन्दनीय है और यह कि जालिम हमेशा पराजित और नाकाम होता है इसके विपरीत मजलूम की दुआ कुबूल होती है और उसकी मजलूमियत और प्रताड़ना के दिन सीमित होते हैं अगर्चे जब उस पर अत्याचार की तान टूटती है तो उसका एक क्षण भी काफी असहज और लम्बा मालूम पड़ता है लेकिन इसकी हैसियत चन्द क्षण, कुछ दिन, कुछ हफते, कुछ माह, चन्द दशक और कुछ वर्षों की ही होती है। अत्याचार इन्सान चाहे अपनों पर करे या दूसरों पर करे, रिश्तेदारों पर करे या पड़ोसियों पर करे, इन्सानों पर करे या जानवरों पर करे, दोस्तों पर करे, या दुश्मनों पर करे करीबी लोगों पर करे या दूर के लोगों पर करे इस की अवैधता और जघन्यता दोनों लोक में सर्वमान्य है बल्कि यह क्यामत के दिन अंधकार का सबब बनेगा।

धरती पर सबसे बड़ी मजलूमियत किसी व्यक्ति या समुदाय का नाहक क़त्ल है और नाहक़ जान से मार देने को इस्लाम सहित तमाम धर्मों में सबसे बड़ा पाप माना गया है। क़त्ल किये जाने वाला हक़ीक़त में सबसे ज़्यादा मजलूम होता भी है और मौत कई पहलुओं से अत्यंत कष्टदायक, खतरनाक और भयानक शक्ल में प्रकट होती है। मौत की कल्पना से ही इन्सान की आत्मा कांप जाती है स्वयं क़ातिल की आंखों में खून भर आता है, दिमाग नाकारा हो जाता है और अगर पूर्ण रूप से उसके अन्दर से मानवता मर न गई हो और उस की तबीअत मस्ख नहीं हो गई हो तो इस अपराध का एहसास उसे हर क्षण स्वयं उसके ऊपर एक भयानक मौत तारी करता रहता है जबकि क़त्ल किये जाने वाले पर यह हालत कुछ वक़्त के लिये तारी रहती है जबकि कातिल इस भयावह दृष्ट और दर्दनाक स्थिति का हर वक़्त शिकार रहता है जब तक कि वह इस तरह की दर्दनाक मौत से दोचार न कर दिया जाये। मां बाप के अवज्ञाकारियों, दुष्टाचारियों और नाहक कातिलों का बुरा अंजाम दुनिया में ही साधारण तौर पर यही होता है कि उनकी औलाद उनके साथ भी दुष्टव्यवहार करे और अवज्ञाकारी हो और इसी तरह क़ातिल भी क़त्ल किये जायें और आखिरत की कड़ी सज़ा व आज़ब कुरआन व हदीस की दलीलों की रोशनी में और अल्लाह की हिकमत और अदालत के तहत निर्धारित है यह बात सर्वमान्य में से मानी जाती है।

मजलूम और कत्ल कर दिये जाने वाले इन्सान के लिये इन चन्द

क्षणों के दर्दनाक हादसात के अलावा वास्तविकता यह है कि उसका समर्थन, उसके साथ हमदर्दी उसके हक़ में भलाई और प्रशंसा की बातें और कभी कभार कम से कम उसकी मजलूमियत के बाद शुरू हो जाती हैं। सृष्टि से लेकर दुनिया की अदालतों और ऐवानों तक में बजाहिर उसके अधिकारों की लड़ाई लड़ी जाती है और उसके साथ हमदर्दी के किस्से देर तक बयान होते रहते हैं बल्कि साधारण इन्सानों से हट कर बहुत से गैर संबन्धित और जालिम इन्सान भी उसकी तरफदारी करने के लिये उठ खड़े होते हैं अल्लाह की अन्य सृष्टि फरिश्ते तो उसके हक़ में दुआएं करते रहते हैं और उसकी मजलूमियत पर आहें भरने वालों की भी कमी नहीं होती।

दुनिया के बहुत से राष्ट्र, संस्थाएं, संगठन और मानव अधिकार की संस्थाएं मकतूल की हमदर्दी और समर्थन में उठ खड़ी होती हैं जो कभी कभार उसके जीवन में कल्पना में भी नहीं आ सकता था। वास्तव में इन्सान की मजलूमियत और उसका नाहक़ क़त्ल है ही इतनी संगीन समस्या कि जिस के लिये पूरे संसार के राष्ट्र और ज़मीन व आसमान की पूरी सृष्टि एकमत और एकजुट हो कर एक साथ खड़े हों तो यह बिल्कुल प्रकृति के अनुसार और न्याय संगत है। संभवतः इसलिये भी इस्लाम ने एक इन्सान के नाहक़ कत्ल को पूरी मानवता के क़त्ल के समान क़रार दिया है और एक निर्दोष को अकारण कत्ल होने से बचा लेने को पूरी मानवता को जीवित कर देने के समान करार दिया है क्योंकि वह समाज तबाह व बर्बाद हो जाता है जिस में मजलूमों की मदद नहीं होती। इस्लाम से पहले के अंधकारमय समाज जिस में चन्द ही नैतिक मूल्य बाकी रह गये थे इसमें भी मजलूमों का समर्थन और उनके हक़ में हमदर्दी के जीते जागते प्रयास मौजूद थे जिस में मानवता के लिये दया-आगार पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम भी व्यवहारिक रूप से सहभागी थे। अल्लाह के पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम ने ईश्दौत्य के बाद जिस मानवीय व विश्व समाज का आधार रखा था उसमें सामूहिक न्याय की मजबूत ईंट भी शामिल थी इसलिये न्याय पर आधारित समाज में ही ज़ालिमों का उन्मूलन और मजलूमों की मदद सुनिश्चित हो सकती है। इस्लाम ने अत्याचार को मिटाने और जालिमों को अत्याचार से रोकना का शान्ति पूर्ण व्यापक सिद्धांत पेश किया है। और कहा है कि जालिमों का हाथ पकड़ कर उन्हें किसी पर अत्याचार करने से रोक कर उनकी मदद करो।

इस संदर्भ में इस्लाम की यह शिक्षा भी काफी महत्वपूण है कि ''नेकी और ईश्परायर्णता (परहेज़गारी, अथवा बुराई से दूर रहने) के कामों में एक दूसरे का सहयोग करें और अत्याचार और फसाद के कामों में किसी से भी सहयोग करने से बचो।'' इसी तरह इस्लाम की यह चेतावनी भी है ''जिसने ज़ालिम की मदद की ताकि उसके असत्य को सत्य साबित करे तो इससे अल्लाह और उसके रसूल का ज़िम्मा खतम हो गया''। (मुस्तदरक हाकिम)

देश व समाज से अत्याचार मिटाने और पीड़ितों की मदद व समर्थन का तक़ाज़ा है कि सरकार

और न्यायपालिक की तरफ से जालिमों के साथ नर्मी न की जाए। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः ''और देखो जालिमों की तरफ हार्गिज़ न झुकना, वर्ना तुम्हें भी नरक की आग लग जाएगी और अल्लाह के सिवा तुम्हारा मददगार न खड़ा हो सकेगा और न तुम मदद किये जाओगे।'' (सूरे हूदः११३)

इसी तरह परिवार व समाज का यह फर्ज़ बनता है कि प्रेमभाव, शिक्षा, प्रशिक्षण और ज्ञान व शिष्टाचार के द्वारा जिम्मेदार, मानवतावादी प्यार व मोहब्बत से सुसज्जित नेक दिल, नर्म स्वभाव नस्लें तैयार करें जिन से दुनिया में प्यार व मुहब्बत और अहिंसा का वातावरण रहे। क्या यह हक़ीक़त नहीं है कि इस धरती पर जो अत्याचार, अधिकार हनन और हत्या की घटनाएं घटित हो रही हैं और जालिम व बागी पैदा हो रहे हैं वह इसी समाज के एक तत्व हैं। इसलिये कम से कम देश, समुदाय और मानवता व समाज का एक सदस्य होने के नाते समाज सुधार और नई नस्ल को उच्च नैतिकता और मानवीय मूल्यों के आधार पर विकसित करने की जिम्मेदारी हमारी भी है। पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम मे हर कोई जिम्मेदार है और तुम में से हर कोई अपने अधीन लोगों के बारे में जवाबदेह है।

इसी तरह समाज के हर सदस्य के साथ बुद्धिजीवियों, प्रभावी और शिक्षति एवं धर्मगुरूओं, दीन ध र्म से संबन्धित लोगों और ओलमा का कर्तव्य बनता है कि देश व समाज में अम्न व शान्ति, मेल मुहब्बत, आपसी भाई चारा, राष्ट्रीय सौहार्द एकता, शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व के लिये चौमुखी प्रयास करते रहें वर्ना चन्द सरफिरों और मूर्खों की मूर्खता और उजडपन पूरी कौम को संगीन हालात से दोचार कर देगी।

इस्लाम जिस तरह यह चाहता है कि किसी भी व्यक्ति समाज, देश या क्षेत्र पर किसी भी हवाले से अत्याचार न हो और मजलूम की हर हाल में मदद की जाए इसी तरह उसका यह भी आदेश है कि इस काम को करते समय अम्न व कानून को हाथ में लेने का साहस न किया जाए। अल्लाह तआला हम सभी को एक दूसरे की मदद व सहयोग करने की क्षमता दे।

(प्रेस रिलीज़)

शौवाल १४४३ का चाँद नज़र नहीं आया

दिल्ली, १ मई २०२२

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की मर्कज़ी अहले हदीस रूयते हिलाल कमेटी दिल्ली से जारी अखबारी बयान के अनुसार दिनांक २९ रमज़ानुल मुबारक १४४३ हिजरी अर्थात १ मार्च २०२२ रविवार को मग्रिब की नमाज़ के बाद अहले हदीस कम्पलैक्स अबुल फज़ल इन्कलैव जामिया नगर नई दिल्ली में मर्कज़ी अहले हदीस रूयते हिलाल कमेटी दिल्ली की एक महत्वपूर्ण मीटिंग हुई और शौवाल के चांद को देखने के सिलसिले में यथापूर्व देश के अधिकांश राज्यों की जमाअती इकाइयों के पदधारियों और समुदायिक संगठनों से फून के माध्यम से संपर्क किये गये मगर किसी भी राज्य से चांद को देखने की प्रमाणित खबर नहीं मिली। इस लिये यह फैसला किया गया कि दिनाक २ मई सोमवार के दिन रमजानुल मुबारक की ३०सवीं तारीख होगी और ईदुल फित्र ३ मई मंगल को मनाई जाएगी इन्शाअल्लाह।

अल्लाह को हर्गिज़ न भूलें

मौलाना खुर्शीद आलम मदनी, पटना

अल्लाह तआला को याद रखना और उसके अधिकारों को अदा करना एक मुसलमान बन्दे का कर्तव्य है उसकी बन्दगी की शान और पहचान है। इसी में दीन एवं दुनिया की भलाईयाँ, ज़िन्दगी की सुगमताएं हैं और जीवन की विसंगतियों, नाकामियों और कड़वाहटों से सुरक्षा भी। एक बुद्धिमान इन्सान सब कुछ गवारा कर सकता है और हर प्रकार के घाटे को सहन कर सकता है लेकिन वह अपने पालनहार और पूज्य को भूल जाए उसे कदापि गवारा नहीं हो सकता। जो लोग अपने पालनहार को भूल जाते हैं वह मूर्ख हैं इसलिये कि इस संसार के पालनहार ने बुद्धिमानों की खूबियाँ बयान करते हुए उनकी जो पहली खूबी बयान की है कि वह हर हाल में खड़े हों, बैठे हों, या लेटे हों अल्लाह को याद रखते हैं उसे भूल जाने का साहस नहीं करते। पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है:

''बेशक आस्मानों और जमीन को पैदा करने और रात व दिन की गर्दिश (गति) में उन अक़्ल वालों के लिये बहुत सी निशानियां हैं जो खड़े और बैठे और अपने पहलू के बल लेटे हुए अल्लाह को याद करते हैं'' (सूरे आले इमरान-१९०-१९१)

और सबसे ज़्यादा बुद्धिमान एवं ज्ञानी हस्ती के बारे में अम्मां आइशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा गवाही देती हैं कि ''अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हर हालत में अल्लाह को याद रखते थे'' (सहीह मुस्लिम ३७३) और अल्लाह को याद करते रहने की वसिय्यत नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम करते थे ''तुम्हारी जुबान हमेशा अल्लाह की याद से तरो ताज़ा रहे'' (तिर्मिज़ी-३३७५)

ऐसे इन्सान के सौभाग्य का क्या कहना जिसे अल्लाह याद हो, उसके दिल की दुनिया अल्लाह की याद से आबाद हो, उसकी जुबान अल्लाह की याद से तरोताज़ा हो और वह हर क्षण अपने रब से संबन्ध को मजबूत बनाने में व्यस्त हो और यक़ीनन वह बड़ा अभाग है, किस्मत का मारा है जो अल्लाह को भूल जाए, जिस ने मां के पेट के अंधेरे में, बच्चेदानी के अंधेरे में उसे नहीं भूला, उसे जिन्दगी दी, रोज़ी दी, वीर्य के कतरे से गोश्त का लौथड़ा फिर इन्सान का ढांचा बनाया और मां के पेट से बाहर निकाला। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया: ''और अल्लाह तआला ने जब तुम्हें तुम्हारी माओं के पेट से निकाला तो तुम कुछ भी नहीं जानते थे और उसने तुम्हारे लिये कान, आखें और दिल बनाया ताकि तुम शुक्र अदा करो'' (सूरे नह्ल-७८)

पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया है:

''वही तुम्हारी माओं के पेटों में, तीन तारीकियों (अंधेरों) में, निरन्तर

चरणों से गुज़ार कर पैदा करता है'' (सूरे जुमर-६)

अल्लाह को भूल जाना यह ऐसा संगीन अपराध और बुरा कर्म है जिसके बड़े बुरे परिणाम प्रकट होते हैं। यह ऐसा मर्ज़ है जो इन्सान को हलाक कर देता है और उसकी आखिरत की नय्या डिबो देता है जिससे अपमान उसका मुक़्ददर बन जाता है और इन्सान सुख की तलाश में परेशान ठोकरें खाता फिरता है आइये इसके कुछ हानिकारक पहलुओं पर गौर करते हैं ताकि इससे दामन बचा कर चलने की अदा सीखें। हम अल्लाह ही से ममद मांगते हैं और उसी पर भरोसा करते हैं।

१. अल्लाह को भूलने वाले अपने आप को भूल जाते हैं यह बड़ा खतरनाक पहलू है कि इन्सान अपने मक़ाम को, अपनी हैसियत को अपने फायदे को बल्कि अपने आप को भूल जाए। यह भूलना ऐसा है जिस का कोई समाधान, कोई एलाज और कोई बदल नहीं है इसी लिये अल्लाह ने चेतावनी देते हुये फरमायाः

''और तुम उनकी तरह न हो जाओ जिन्होंने अल्लाह को भुला दिया तो अल्लाह ने उन्हें उनकी जात की तरफ से गाफिल कर दिया वही लोग फ़ासिक़ हैं'' (सूरे हश्र-१६)

२. अल्लाह को भूलने वाले स्वयं के साथ अपनी मानवता की खूबी को भूल जाते हैं और मानवता को तार-तार करके हैवानों की सफ में आ जाते हैं बल्कि वह चौपायों से भी बदतर हो जाते हैं जो मानवता का बड़ा अपमान है जिस इन्सान को उसके पालनहार ने सब से बेहतरीन व सौन्दर्य माडल में पैदा किया क्षितिज में वर्चस्व दिया, संसार के बाग़ का सौन्दर्य फूल बनाया ऐसा इन्सान जो मानवता की सीमाओं को छलांग करके जानवरों की लाइन में आ जाए। ऐसे ही अपरिणामदर्शी गाफिल इन्सान के बारे में पवित्र कुरआन ने फरमायाः

''उनके दिल ऐसे हैं जिनसे समझते नहीं और उनकी आंखें ऐसी हैं जिन से देखते नहीं और उनके कान ऐसे हैं जिन से सुनते नहीं, वह बहाइम (चौपाये) के समान हैं उनसे भी ज़्यादा रास्ते से भटके हुए हैं'' (सूरे आराफ-१७६)

३. अल्लाह को भूलने वाले अपने पैदा किये जाने के मकसद को भूल जाते हैं उसे यह याद नहीं रहता कि इस दुनिया में हमारे पैदा किये जाने का उददेश्य क्या है?

इस दुनिया में हर व्यक्ति अपने जीवन का एक निर्धारित एवं तय मकसद रखता है और इसी के साथ वह जीता है। एक मोची जो चौराहे पर बैठता है वह समझता है कि हमारा मक़सद जूते में पालिश लगाना है इसलिये वह बड़ी तत्परता से अपने मकसद को पूरा करता है उसे यह एहसास होता है कि अगर हम अपने मक़सद को भूल गये तो हम और हमारे बच्चे भूखे रह जायेंगे।

इस संसार की हर वस्तु अल्लाह ने एक मकसद से बनाया है और यह इन्सान यूं ही बेकार नहीं बल्कि उसके पैदा किये जाने का एक महान उददेश्य है जैसा कि कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः

''और मैं ने जिन्नों और इन्सानों को केवल इस लिये पैदा किया है कि वह मेरी इबादत करें'' (सूरे ज़ारियात आयत-५६)

कुरआन में अल्लाह तआला

ने फरमायाः

''क्या तुम यह गुमान किये बैठे हो कि हम ने तुम्हें बेकार पैदा किया है और तुम हमारी तरफ लौटाए नहीं जाओगे?'' (सूरे मोमिनून-११५)

अब अगर कोई शख्स अल्लाह को भूल कर अपने पैदा किये जाने के मकसद से गाफिल होकर अल्लाह के अलावा की इबादत करने लगे, अल्लाह को छोड़ कर दूसरों से मांगना शुरू कर दे तो गोया ऐसा शख्स अपनी जिन्दगी की सहीह लाइन से दूर हो गया और इस मक़सद की अदायगी में नाकाम साबित हुआ जिस के लिये उसे दुनिया में भेजा गया है फिर अल्लाह से इस बग़ावत का जो अंजाम हो गा उसे भुगतने के लिये उसे तैयार रहना चाहिये।

४. अल्लाह को भूलने वाले अपने मां-बाप को भूल जाते हैं। अल्लाह को भूलने का खतरनाक अंजाम यह भी है कि ऐसे लोग उस महान हस्ती को भी भुला देते हैं जो सबसे बड़े उपदेशक और महान शुभचिंतक हैं और जो इस दुनिया में हमारे वजूद का जाहिरी सबब हैं। आज मां बाप और औलाद के बीच दूरियाँ बढ़ रही हैं और प्रचलित रिश्ते कमज़ोर और पतन का श्किार हो रहे हैं।

माँ-बाप से मुहब्बत, मां बाप से वचन निभाना और उनकी सेवा पुरानी दास्तान बनती जा रही है और इसका अहम सबब अल्लाह और उसके महान अधिकारों को भूल जाना है। पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला ने अपनी खालिस इबादत के साथ मां बाप के साथ अच्छा व्यवहार करने का हुक्म दिया हैः

''और आप के रब ने यह फैसला कर दिया है कि लोगो! तुम उसके सिवा किसी की इबादत न करो और माँ-बाप के साथ अच्छा बर्ताव करो'' (सूरे इसरा'२३)

पवित्र कुरआन की इस आयत से अल्लाह की इबादत और मां बाप के साथ अच्छा बर्ताव करने के बीच गहरे संबन्ध का पता चलता है और यह संकेत मिलता है कि अगर हम अपने असल माबूद (पूज्य) को भूल जाएं गे और उसकी इबादत से मुंह मोड़ लेंगे तो इसका अनिवार्य परिणाम यह होगा कि हम अपने वास्तविक शुभचिंतक को याद नहीं रखेंगे। मां बाप और उनके अधिकार हमें उस वक्त याद रहें गे जब हम अल्लाह का उपासक बन कर जीवन गुज़ारेंगे।

५. अल्लाह को भूलने वाले और उसके आदेशों से दूरी अपनाने वाले अपनी राहत व आराम को भूल जाते और सुकून की सांस से वंचित हो जाते हैं। क्या यह मामूली सज़ा है कि ऐसे गाफिल लोग माल व दौलत के पीछे पागल बने रहते हैं, वह पैसे हासिल करने की मशीन बन गये हैं, उसे चैन नहीं, आराम का मौक़ा नहीं, खाने पीने की फुर्सत नहीं, अल्लाह के सामने झुकने का टाइम नहीं, रिश्तेदारों, दोस्तों मित्रों से मुलाकात का वक़्त नहीं, कल्याणकारी और समाजी कामों में भाग लेने और धार्मिक सभाओं में सहभाग के लिये छुटटी नहीं, दुनिया की लालच व लोभ और हवस ने उसे कहीं का नहीं छोड़ा न घर के रहे न घाट के। आखिर इस दौलत से क्या फायदा जिससे स्वयं कोई भायदा न पहुंचे। सुख और हर्ष के

क्षण से वंचित हो जाए। खाना तो अल्लाह ने दिया लेकिन उसे खाने न दिया, दौलत तो दी लेकिन संतोष की नेमत छीन ली। शरीर पर कीमती कपड़े भी दिए लेकिन दिलों में आग लगा दी, यह अल्लाह से गफलत, उससे दूरी और उसके आदेशों को छोड़ने का अंजाम है। जिस का हमें एहसास नहीं।

वाय नाकामी मता-ए-कारवां जाता रहा।

कारवां के दिल से एहसासे ज़ियां जाता रहा

अल्लाह तआला ने सच फरमायाः

''और जो शख्स मेरी याद से मुंह मोड़े गा वह दुनिया में तंग हाल रहेगा और क़यामत के दिन उसे हम अन्धा उठाएंगे।'' (सूरे तॉहा-१२४)

६. अल्लाह तआला को भूलने वालों को अल्लाह भी भुला देता है हम जानते हैं कि सबसे बड़ी कामयाबी शाश्वत आराम व राहत आखिरत (मरने के बाद वाले जीवन) का सुख व राहत है और सब से बड़ा खसारा आखिरत का खसारा है। अब इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या हो सकता है और इससे बड़ी मार और क्या हो सकती है कि अल्लाह किसी बन्दे को क़यामत के दिन आख़िरत में भूल जाए, उसे याद न करे उसे दया करूणा की दृष्टि से न देखे और यह एलान फरमा देः

''आज हम तुम्हें इस तरह भूल जायें गे जिस तरह तुम ने अपने उस दिन की मुलाकात को भुला दिया था'' (सूरे जासिया-३४)

स्पष्ट है कि यह अज़ाब बुरे कर्म की सज़ा के अध्याय से है जब उसने अल्लाह को भुला दिया तो वह कैसे उस दिन उसे याद करेगा जिस दिन उसकी बादशाहत होगी। फरिश्ते, और पैगम्बर अल्लाह के सामने सफ लगाए खड़े होंगे, सब की जुबानें बन्द होंगी। अल्लाह की इजाज़त के बिना किसी को बोलने की साहस न होगी। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः

''जिस दिन रूहुल अमीन और अन्य फरिश्ते सफ बांधे खड़े होंगे, लोग बात नहीं करेंगे सिवाए उसके जिसे रहमान इजाज़त देगा और जो सच्ची बात कहेगा'' (सूरे नबा-३८)

उसने याद करने वाले बन्दों से वादा कर रखा हैः

''पस तुम लोग मुझे याद करो मैं तुम्हें याद रखूंगा और मेरा शुक्र अदा करो और नाशुकरी न करो'' (सूरे बक़रा-१५२)

लेख का सारांश यह है कि अल्लाह को भूल जाना घातक है। हमें चाहिए कि नमाज़, कुरआन की तिलावत, जिक्र व अज़कार के एहतमाम और कुरआन ने जिन चीज़ों और बातों से मना किया है उनसे बच करके उन बन्दों में शामिल हों जो अल्लाह को बहुत याद रखते हैं।

यही कामयाबी की सबसे बड़ी कुंजी है और दुनिया व आखिरत में सफलता का रहस्य व ताज भी, यही दिल के सुकून का आजमाया हुआ नुस्खा भी है और जीवन के विभिन्न मैदानों में खुश्हाली की जमानत भी और यही शैतान के हथकंडों और दीन व ईमान के लुटेरों से सुरक्षित रहने का मजबूत किला भी है और जीवन के उलझनों, गम व दर्द के भयावह छांव में हर्ष का सन्देश और मज़बूत सहारा भी।

मिस्वाक की फ़ज़ीलत

मौलाना अब्दुल मन्नान शिकरावी

मिस्वाक करना पवित्रता प्राप्त करने का एक माध्यम और पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत है मिस्वाक की फज़ीलत एवं श्रेष्ठता के सिलसिले में बहुत सी हदीसें आई हैं। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहो अन्हा बयान करती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मिस्वाक मुंह की सफाई और रब की खुश्नूदी का माध्यम है। (सहीह बुखारी)

मिक़दाम बिन सुरैह बिन हानी का बयान है कि मैंने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा से पूछा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब घर में दाखिल होते तो किस काम से शुरूआत करते थे? फरमाती हैं मिस्वाक से। (सहीह मुस्लिम)

इमाम नौवी रह० फरमाते हैं कि इस हदीस में हर समय मिस्वाक की फज़ीलत, इसका एहतमाम और बार-बार करने का सुबूत मिलता है। इससे घर में प्रवेश करते वक़्त मिस्वाक करने का मुस्तहब होने का पता चलता है क्योंकि इसमें बरकत और जब घर वालों से बातचीत हो तो बात चीत करने में लगाव भी पैदा होता है (सहीह मुस्लिम)

इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल (पैगम्बर) मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रात में दो रकात नमाज़ पढ़ते फिर लौटते और मिस्वाक करते। (सहीहुल जामे)

अधिकांश ओलमा का मसलक है कि मिस्वाक करना तमाम अवकात में मुस्तहब है। हर वजू और नमाज़ के वक़्त इस पर बल दिला गया है। नींद से उठने, घर में प्रेवेश करने और मुंह की बू बदल जाने पर भी मिस्वाक करने की ताकीद आई है क्योंकि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अगर मुझे अपनी उम्मत के कठिनाई में पड़ जाने का भय न होता तो मैं हर नमाज़ के वक़्त मिस्वाक करने का हुक्म दे देता (सहीह बुखारी व सहीह मुस्लिम)

जिस चीज़ का हुक्म दिया जाता है वह अनिवार्य हो जाती है चूंकि यहाँ हुक्म नहीं दिया है इसलिये इसे मुस्तहब माना जाएगा। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का एक और फरमान है जिस में नमाज़ की जगह वजू का शब्द है अर्थात हर वजू के वक़्त मिस्वाक का हुक्म दे देता। (सहीह बुखारी)

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रात में उठते तो अपने मुंह को मिस्वाक से मलते। (सहीह मुस्लिम)

सहीह मुस्लिम की रिवायत में है कि जब तहज्जुद के लिये उठते। एक और रिवायत में है कि जब आप नींद से उठते तो अपने मुंह को मिस्वाक से मलते।

सारांश यह है कि नींद से उठते वक़्त और इबादत के वक़्त मिस्वाक करना सुन्नत है। मिस्वाक

के मुस्तहब होने में मर्द व औरत, छोटे व बड़े के दर्मियान कोई अन्तर नहीं बल्कि सबके लिये समान रूप से प्रिय कर्म है। इस पर सबको सवाब मिलेगा। साधारण दलीलों की रोशनी में यह मसला बयान किया गया है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता हैः

''जो शख्स सत्कर्म करे मर्द हो या औरत लेकिन ईमान वाला हो तो हम उसे यकीनन अत्यंत बेहतर जिन्दगी अता फरमाएंगे और उनके अच्छे कर्मों का बेहतर बदला भी उन्हें अवश्य देंगे।'' (सूरे नहूल-९७)

किसी की सहमति से उसकी मिस्वाक को स्तेमाल करना जायज़ है और सुन्नत तरीका यह है कि पहले इसे धो ले फिर स्तेमाल करे जैसा कि हज़रत आइशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा का बयान है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मिस्वाक करते तो मुझे दे देते ताकि मैं इस मिस्वाक को धो लूं फिर इससे मिस्वाक करने की शुरूआत करूँ और फिर इस मिस्वाक (दातौन) को धो कर आप को दे दूं (अबू दाऊद)

इसी तरह की एक और रिवायत पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जीवन के अंतिम अवसर की है जिस में हज़रत आइशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि अबदुर्रहमान बिन अबू बक्र मेरे पास आए वह अपने पास मौजूद एक मिस्वाक से मिस्वाक कर रहे थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस पर नज़र पड़ी तो मैं ने उनसे कहाः ऐ अब्दुर्रहमान! यह मिस्वाक मुझे दे दो फिर उन्होंने मुझे दे दी मैंने इसे चबाया और (नर्म करके) नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को दे दिया आप ने इससे इस हाल में मिस्वाक की कि आप मेरे सीने से सहारा लेकर बैठे हुए थे। (सहीह बुखारी)

इमाम बुखारी रह० फरमाते हैं कि किसी अन्य की मिस्वाक का स्तेमाल बाज सलफ के नजदीक अप्रिय नहीं है लेकिन यह बात याद रहे कि स्तेमाल से पहले इसे धो लिया जाए। (मआलिमुस सुनन)

चिकित्सकों का कहना है कि मिस्वाक के स्तेमाल किये हुए हिस्से को काट कर फैंक देने के दो फायदे हैं:

पहला यह कि इसके अन्दर जो माददे होते हैं वह स्तेमाल के बाद खतम हो जाते हैं। दूसरे यह कि स्तेमाल किये गये भाग में जरासीम और धूल मिटटी की संभावना रहती है और काट कर फैंक देने से यह शंका खतम हो जाती है और साफ सुथरा हिस्सा स्तेमाल करने को मिलता है इसी लिये डाक्टर मश्वरा देते हैं कि मिस्वाक को एक दिन स्तेमाल किया जाए फिर स्तेमाल किये गये हिस्से को काट दिया जाए और नया हिस्सा स्तेमाल किया जाए।

पीलू की मिस्वाक खास तौर से इसकी जड़ सबसे बेहतर है। जहां तक वैधता की बात है तो किसी भी पाक व साफ पेड़ मिसाल के तौर पर खुजूर, जैतून वगैरह की हर टेहनी से मिस्वाक करना जायज़ है।

अबू बक्र बिन अरबी मालिकी रह० ने फरमायाः सुन्नत यह है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अनुसरण करते हुए पेड़ की टेहनी से मिस्वाक की जाए इसमें भी सबसे अफज़ल पीलू है क्योंकि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्यारे सहाबा किराम रज़ियल्लाहो तआला अन्हो

इसी से मिस्वाक किया करते थे इससे दांत अच्छी तरह साफ होते हैं और वह नर्म भी रहती है। अगर यह न मिले तो सफाई और नर्मी में जो इस जैसी हो उससे की जाए। (तिर्मिज़ी)

इब्ने क़नासा रह० कहते हैं कि ऐसी मिस्वाक स्तेमाल करना मुस्तहब है जो मुंह को साफ करे और इसे ज़ख्मी या नुक्सान न पहुंचाए और मुंह में न लगे जैसा कि पीलू है। (मुग्नी)

चिकित्सकों के रिसर्च और कथन की रोशनी में मिस्वाक और बरश की तुलना इस तरह की जा कसती है।

१. मसूढ़ों के जलन को दूर करने में मिस्वाक बरश से ज्यादा कारगार है।

२. मिस्वाक सफाई सुथराई के दृष्टिकोण से बेहतर है क्योंकि इसमें प्राकृतिक रेशे होते हैं जो बरश के रेशों से बेहतर होते हैं और इस के रेशों में साफ करने वाले तत्व मौजूद होते हैं।

३. मिस्वाक में अच्छी खुश्बू वाले पदार्थ होते हैं जो कि पेस्ट में नहीं पाये जाते।

४. मिस्वाक में फलोराइड के अलावा ऐसे तत्व पाये जाते हैं जो दातों को सड़ने से बचाते हैं, कीटाणुओं का मुकाबला करते करते हैं और मुंह की टिशूज़ की हिफाज़त करते हैं।

५. बरश के मुक़ाबले में मिस्वाक चूने, तलछट जो खाने और सोने के बाद दांतों में जमा हो जाते हैं उनको हटाने में प्रभावी साबित होते हैं।

६. मिस्वाक ऐसे लाभकारी पदार्थों पर आधारित होती है जो किसी भी पेस्ट या मुंह और दांतों को साफ करने वाली चीज़ में नहीं होते।

७. चूंकि पुराने रेशों को काट दिया जाता है इस लिये मिस्वाक के रेशे बदलते रहते हैं और वह जरासीम और धूल मिटटी से पाक व साफ होते हैं जब कि बरश में गन्दगी लगी रह सकती है और बीमारियों के ट्रांसफर होने की संभावना बनी रहती है। उपर्युक्त विवरण से यह पता चला कि मिस्वाक बरश की अपेक्षा बेहतर है क्योंकि यह नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत है।

इमाम सनआनी रह० और इब्ने मुनीर रह० ने कहा है कि मिस्वाक का उल्लेख लगभग सौ हदीसों में आया है फिर इमाम सनआनी रह० ने फरमायाः आश्चर्य है कि ऐसी सुन्नत जिस के सिलसिले में इतनी ज़्यादा हदीसें आई हैं उसे भी बहुत से लोगों ने छोड़ रखा है बल्कि बहुत से फुक़ा-हा (धर्म शास्त्रियों) ने इस तरफ ध्यान नहीं दिया है जो कि बड़े ही खासारे और नुकसान की बात है इसी लिये मिस्वाक अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सिरहाने रखी रहती थी जब आप जागते तो सब से पहले मिस्वाक ही करते। (सहीहुल जामे अस्सगीर)

सेहत के दृष्टिकोण से भी मिस्वाक के फायदे में से यह भी है कि वह मुंह को तरोताज़ा रखती है, बलग़म को कम करती है, मसूढ़ों को मज़बूत करती है, दांतों को सड़ने से बचाती हैं दांतों को साफ सुथरा रखती है, खाने को हज़म करने में मददगार साबित होती है, इससे अच्छी नींद आती है और मुंह को हर प्रकार की बीमारियों से सुरक्षित रखती है।

यह ध्यान रहे कि मिस्वाक से पहले या बाद में किसी दुआ के पढ़ने का सुबूत नहीं है।

पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बच्चों से मुहब्बत और व्यवहार

हज़रत अनस रज़ियल्लाहो अन्हो फरमाते हैं रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सारे लोगों से बढ़कर बच्चों और घर वालियों पर रहम फरमाने वाले थे। इसे इब्ने असाकिर ने रिवायत किया है। (सहीह)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो अन्हो कहते हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहो अन्हो का बोसा लिया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास हज़रत अक़रा बिना हाबिस रज़ियल्लाहो अन्हो बैठे थे, कहने लगे मेरे दस बेटे हैं मैंने उनमें से कभी किसी का बोसा नहीं लिया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनकी तरफ देखा और फरमाया जो दूसरों पर दया नहीं करता उस पर अल्लाह की तरफ से भी दया नहीं की जाती। इसे बुखारी ने रिवायत किया है।

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहो अन्हा से रिवायत है कि नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक बच्चे को अपनी गोद में बिठाया और उसकी तहनीक की, बच्चे ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर पेशाब कर दिया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पानी मंगवाकर उस पर बहा दिया। इसे बुखारी ने रिवायत किया है।

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा रज़ियल्लाहो अन्हा कहती हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उसामा रज़ियल्लाहो अन्हो की नाक साफ करने का इरादा फरमाया तो मैंने अर्ज़ किया मैं किए देती हूं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया आइशा! मैं इससे मुहब्बत करता हूं तू भी इससे मुहब्बत कर। इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है। (हसन)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहो अन्हो फरमाते हैं रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अन्सार से मुलाक़ात के लिए तशरीफ ले जाते तो उनके बच्चों को सलाम करते और उनके सरों पर मुहब्बत से हाथ फेरते। इसे इब्ने हिब्बान ने रिवायत किया है।

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया मैं कभी कभी नमाज़ शुरू करता हूं तो चाहता हूं कि लम्बी नमाज़ पढ़ूं, लेकिन अचानक किसी बच्चे के रोने की आवाज़ सुनता हूं तो अपनी नमाज़ संक्षिप्त कर देता हूं क्योंकि मैं जानता हूं कि बच्चे के रोने से मां के दिल पर कैसी चोट पड़ती है। इसे बुखारी ने रिवायत किया है।

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहो अन्हा कहती हैं एक देहाती नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुआ आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बच्चों से प्यार करते हुए देखकर कहने लगा आप भी बच्चों को चुंबन लेते हैं, हम तो नहीं लेते आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया अगर अल्लाह तआला ने तेरे दिल से शफक़त निकाल ली है तो मैं क्या कर सकता हूं। इसे बुखारी ने रिवायत किया है।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहो अन्हो कहते हैं मेरी मां मुझे नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास लेकर हाज़िर हुईं और अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो

अलैहि वसल्लम यह मेरा बेटा अनस है मैं इसे आपकी सेवा के लिए लाई हूं, इसके लिए अल्लाह तआला से दुआ फरमाएं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अनस रज़ियल्लाहो अन्हो को दुआ दी या अल्लाह! इसके माल और औलाद में वृद्धि फरमा। हज़रत अनस रज़ियल्लाहो अन्हो कहते हैं मेरे पास ढेरों माल है और सौ से ज़्यादा पोते और पोतियां हैं। इसे मुस्लिम ने रिवायत किया हैं

हज़रत अनस रज़ियल्लाहो अन्हो कहते हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमारे साथ घुल मिल जाते यहां तक कि मेरे छोटे भाई से एक बार आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया ऐ अबू उमैर! नुगैर (सुर्ख चोंच वाली चिड़िया) ने तुम्हारे साथ क्या किया? हज़रत अनस रज़ियल्लाहो अन्हो कहते हैं मेरे भाई के पास एक चिड़िया थी जिससे वह खेलता था और वह मर गई तब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अबू उमैर का ग़म दूर करने के लिए यह बात इरशाद फरमाई। (बुखारी व मुस्लिम)

हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी एक रान पर मुझे बिठा लेते और दूसरी रान पर हज़रत हसन रज़ियल्लाहो अन्हो को बिठा लेते फिर दोनों को अपने सीने से चिमटा लेते और दुआ फरमाते या अल्लाह! मैं इन पर दया करता हूं तू भी इन पर दया फरमा इसे बुखारी ने रिवायत किया है।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहो अन्हो कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत ज़ैनब बिन्ते उम्मे सलमा रज़ियल्लाहो अन्हो के साथ खेलते और उन्हें प्यार से बार बार या जुवैनब या जुवैनब कहकर बुलाते।

हज़रत उम्मे खालिद रज़ियल्लाहो अन्हो कहती हैं मैं अपने बाप के साथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुई मैंने ज़र्द रंग की क़मीज़ पहन रखी थी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने देखा तो फरमाया वाह वाह! अब्दुल्लाह हदीस के रावी कहते हैं कि यह हबशी ज़बान का शब्द है। उम्मे खालिद कहती हैं मैंने जाकर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहरे नुबुवत से खेलना शुरू कर दिया। मेरे बाप ने मुझे डांटा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया इसे खेलने दो। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरी तरफ घूमे और मुझे यह दुआ दी इसे खेलने दो। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरी तरफ घूमे और मुझे यह दुआ दी अल्लाह करे तुम यह कपड़ा पुराना करो और फ़ाड़ो अर्थात लम्बे समय तक इस्तेमाल करो पुराना करो और फाड़ो, पुराना करो और फाड़ो। इसे बुखारी ने रिवायत किया है। हज़रत साइब बिन यज़ीद रज़ियल्लाहो अन्हो के आज़ाद किए गए नए गुलाम हज़रत अता रह० कहते हैं मैंने अपने आक़ा साइब बिन यज़ीद की दाढ़ी के बाल सफेद और सर के बाल सियाह देखे तो उनसे पूछा, आप के सर के बाल सफेद क्यों नहीं हुए? हज़रत साइब रज़ियल्लाहो अन्हो कहने लगे मेरे सर के बाल कभी सफेद नहीं होंगे इसकी वजह यह है कि मैं कमसिन (छोटा) था, लड़कों के साथ खेल रहा था नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का गुज़र हुआ तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सब बच्चों को सलाम किया, बच्चों में से सिर्फ मैंने सलाम का जवाब दिया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे अपने पास बुलाया और पूछा तुम्हारा नाम क्या है? मैंने अर्ज़ किया साइब बिन यज़ीद इब्ने उख्त नम्र (यह हज़रत साइब का लक़ब है) आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मेरे सर पर हाथ रखा और फरमाया अल्लाह तुझे बरकत दे। मेरा ख्याल है कि

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हाथ वाली जगह के बाल कभी सफेद नहीं होंगे। इसे तबरानी ने रिवायत किया है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन बुस्र रज़ियल्लाहो अन्हो कहते हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मेरे सर पर अपना मुबारक हाथ रखा और फरमाया यह लड़का सौ साल ज़िंदा रहेगा। अतएव अब्दुल्लाह ने सौ साल की उम्र पाई। इसे बज्ज़ार ने रिवायत किया है। हज़रत यूसुफ बिन अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहो अन्हो कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे अपनी गोद में बिठाया मेरे सर पर हाथ रखा, मेरा नाम यूसुफ रखा और मेरे लिए बरकत की दुआ फरमाई। इसे तबरानी ने रिवायत किया है।

हज़रत अब्दुल मलिक बिन उमैर रज़ियल्लाहो अन्हो कहते हैं कि मदीना मुनव्वरा में एक लड़का था जिसकी उपाधि अबू मुसअब थी। वह नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुआ आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुबारक हाथ में एक गुच्छा था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे हाथों में मलकर उसका छिलका उतारा, फूंक मारी और उसके दाने लड़के को दिए। लड़के ने लेकर खा लिए। अन्सारे मदीना उसे अच्छा न समझते लेकिन जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अबू मुसअब रज़ियल्लाहो अन्हो को दाने दिए तो उसने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को वापस न पलटाए। अबू मुसअब रज़ियल्लाहो अन्हो कहते हैं कि मैं नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास से उठकर अभी थोड़ी दूर ही आया था कि फिर वापस पलटा और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आप मेरे लिए दुआ फरमाएं कि अल्लाह मुझे जन्नत में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की संगत प्रदान फरमाए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा तुम्हें यह बात किसने सिखाई है? मैंने अर्ज़ किया किसी ने नहीं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया मैं दुआ करूंगा जब मैं वापस होने लगा तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे बुलाया और इरशाद फरमाया सज्दों की अधिकता से मेरी मदद करना। मैं अपनी मां के पास वापस घर आया तो मां ने मालूम किया इतनी देर कहां रहे? मैंने बताया मैं नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास था, आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक गुच्छा लाए अपने मुबारक हाथ से उसके दाने निकाले और मुझे दिए, मैंने वापस करना पसन्द न किए और ले लिए अबू मुसअब रज़ियल्लाहो अन्हो की मां ने कहा तूने बहुत अच्छा किया फिर मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुआ और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मेरे लिए दुआ की। इसे बज्ज़ार ने रिवायत किया है। हज़रत सहल बिन साद रज़ियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में पीने की कोई चीज़ पेश की गई तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उससे कुछ पिया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दायीं तरफ एक लड़का और बायीं तरफ उम्र रसीदा (बड़ी आयु) के लोग बैठे थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस लड़के से फरमाया क्या तुम इजाज़त देते हो कि मैं पहले उन लोगों को यह पानी दे दूं। लड़के ने कहा अल्लाह की क़सम! या रसूलुल्लाह सल्ल० मैं आपके झूठे में से अपना हिस्सा किसी को देना कभी पसन्द नहीं करूंगा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने प्याला उसे थमा दिया। इसे बुखारी ने रिवायत किया है। (फज़ाइल रहमतुल लिल आलमीन से संकलित अहादीस)

हसद न करो

नजमा परवीन हाशिमी

समाज उस वक़्त साफ सुथरा और अच्छा माना जाता है जब समाज के लोग नेक दिल और नेक स्वभाव के हों उनका दिल निःस्वर्थता ईश्परायणता से सुसज्जित हो और हर एक इन्सान दूसरे इन्सान से उसकी जुबान और हाथ से सुरक्षित हो। चुग्ली गीबत झूठ और झूठे आरोप से उसकी जुबान पवित्र हो इसी तरह सीना अर्थात दिल डाह, नफरत और हसद जैसे निन्दित बुराइयों से खाली हो और हर दिल त्याग और आपसी मुहब्बत की भावना से परिपूर्ण हो लेकिन आज हमारा समाज बुरी तरह बिगड़ चुका है। हर प्रकार की बुराइयों ने जड़ पकड़ ली है और दीन में नई चीज़ें और बातें आ गयी हैं जिन को खतम करने की ज़रूरत है।

समाज को बिगाड़ने और बर्बाद करने वाली बुराइयों में से एक बुराई हसद भी है। इस लेख में कुरआन और हदीस की रोशनी में हसद और डाह की खराबियों और नुकसानात को बयान करने का प्रयास किया गया है।

किसी के ज्ञान, हुनर, माल व दौलत के खतम या छिन जाने की आशा करने को हसद कहते हैं। (मिनहाजुल मुस्लिम पृष्ठ १८३)

यह आशा चाहे इस निय्यत से हो कि मालदार की चीज़ उसे मिल जाए या उसे न मिले लेकिन उससे छिन जाए दोनों हालतों में ऐसी निय्यत अवैध है। अल्लाह जिसे चाहता है देता है और जिसे चाहता है उस से वंचित कर देता है यह अल्लाह के रोजी बांटने या देने की व्यवस्था और उसके दया करूणा पर आपत्ति है और यह हसद करने वाले के धार्मिक एवं मानसिक पतन की पहचान है। हसद करने वाला हमेशा दूसरे लोगों की तबाही व बर्बादी के बारे में सोचता रहता और उसके खिलाफ योजना बनाता है जबकि अगर अपनी कामयाबी के लिये इतनी मेहनत करे तो उसे कामयाबी हासिल हो सकती है हर मुसलमान पर वाजिब है कि वह अपना दिल हसद और कुढ़ से पवित्र रखे। यह सब इस्लामी भाईचारा के खिलाफ है इस्लाम धर्म इसे पसन्द नहीं करता इस के विपरीत वह प्रेम और भाई चारे का पाठ देता है, नफरत और दुश्मनी से रोकता है। कुरआन और हदीस में असंख्य स्थानों पर इस निन्दित भावना से रोका गया है। अल्लाह तआला ने कुरआन में फरमायाः ''क्या वह लोग दूसरे लोगों से उन चीज़ों पर जलते हैं जो अल्लाह तआला ने अपना करूणा से दे रखी है'' (सूरे निसा-५४)

सहीह बुखारी की एक रिवायत में है कि तुम बदगुमानी से बचो, बदगुमानी बड़ी झूठी बात है और किसी का राज़ सुनने के लिये कान न लगाओ और टोह में न पड़ो और भाव न बढ़ाओ, आपस में हसद न करो, आपस में कुढ़ और हसद न करो, एक दूसरे से मुंह न मोड़ो अल्लाह के बन्दों भाई-भाई बन कर रहो'' (बुखारी १/४१८ किताबुल अदब)

एक अवसर पर आप

सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हसद को संगीन पाप क़रार देते हुए फरमाया कि यह इन्सान के दीन को बर्बाद कर देता है यह गुज़री हुई कौमों में पाया जाता था और इसी वजह से बहुत सी कौमें आपस में लड़ कर हलाक हो गईं। शैतान ने सबसे पहले हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की प्रतिष्ठा को देख कर हसद किया तो वह हमेशा हमेशा के लिये धुतकार दिया गया। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हसद के नुक़सानात को बयान करते हुए फरमायाः ''पहले लोगों की जो बुराइयां तुम्हारे अन्दर घुस आई हैं वह हसद और दुश्मनी है जो तुम्हारे दीन को मूंड देगी मैं यह नहीं कहता कि यह बाल मूंड देगी बल्कि दीन का सफाया कर देगी।'' (अत्तरगीब वत्तरहीब ३/३४८)

जिसके अन्दर हसद और कुढ़ जैसी बीमारी घुस आती है उसे यह तबाही व बर्बादी के घाट उतार कर ही दम लेती है इसके घातक होने की मिसाल ऐसी ही है जैसे एक भूखे भेड़िये को बकरियों के झुण्ड में छोड़ दिया जाए।

पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः दो भूखे भेड़िये बकरियों के झुण्ड को इतना नुकसान नहीं पहुंचा सकते जितना कि माल का लोभ और हसद मुसलमानों के दीन को बर्बाद कर देता है। (तिर्मिज़ी, किताबुज जोहूद ४/५८८)

इस हदीस के आख़िरी टुकड़े में और एक दूसरी हदीस में तो यहां तक कहा गया है कि हसद इन्सान के लिये इतना घातक है जितना आग लकड़ी के लिये। पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः ''और हसद से बचो क्योंकि हसद नेकियों को इस तरह खा जाती है जिस तरह आग लकड़ी को खा लेती है'' (इब्ने माजा किताबुज जोहूद २/५६२)

इस हदीस की व्याख्या इस तरह की जा सकती है कि हसद करने वाला दूसरों की नेमत और खुश्हाली को देख कर दिल ही दिल में कुढ़ता और हसद की आग में झुलसता रहता है जब दूसरे की नेमत में कोई पतन हीं आता तो खुलेआम उसके विरोध पर उतर आता है, बुरा भला कहता है गालियाँ देता है, गीबत करता है, सारांश यह है कि हसद करने वाला बन्दों के बहुत से अधिकारों के हनन का गुनेहगार हो जाता है और जो शख्स दुनिया में अल्लाह के बन्दों के अधिकारों का हनन करता है क्यामत के दिन उसकी नेकियां महसूद (जिस से हसद जलन किया जा रहा है) को दे दी जाएं गी और हासिद की नेकियां खतम होने की सूरत में महसूद का गुनाह भी हासिद के सर डाल दिया जाए गा और उसे औंधे मुंह नरक में फेंक दिया जाए गा। हसद और ईमान एक मुसलमान के दिल में एक साथ जमा नहीं हो सकते। अल्लाह के रसूल पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः किसी बन्दे में ईमान और हसद एक साथ जमा नहीं हो सकते (अत्तरग़ीब वत्तरहीब ३/५४६

पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः लोग निरन्तर भलाई और सुख में होंगे जब तक कि हसद न करें और फरमाया हसद करने वाला मेरे रास्ते पर नहीं'' अत्तरगीब वत्तरहीब ३/५४७ वह लोग बधाई के पात्र हैं जिन्होंने अपने दिल को हसद जैसे निन्दित कृत्य से पवित्र व साफ कर लिया, जुबान को जायज़ स्तेमाल किया और अल्लाह तआला ने जो

दिया उस पर संतोष किया और उच्च बुद्धिमत्ता और सुचरित्र के सांचे में अपने को ढ़ाल लिया।

हसद दो प्रकार के होते हैं एक वैध और दूसरे अवैध। किसी के माल व दौलत, ज्ञान व हुनर और अन्य नेमतों के पतन की आशा करना नाजायज़ है मगर चन्द स्थितियों में जायज़ है जैसे किसी फासिक़ व फाजिर पापी पर अल्लाह की नेमतों की भरमार है जिसके आधार पर वह निर्दोषों को दुख पहुंचाए या माल व दौलत के जोर पर फितना व फसाद फैलाए तो उसकी नेमत के पतन की आशा करना वैध है। दूसरी किस्म का संबन्ध इन्सान की उस इच्छा से है जो दूसरों की खुश्हाली व परहेजगारी को देख कर उसके दिल में पैदा होता है कि काश मेरे पास भी इसी तरह माल व दौलत होती तो मैं इससे मानव सेवा करता इसी को गिब्ता और रश्क कहते हैं। हर इन्सान के लिये ज़रूरी है कि परहेज़गारी और पवित्रता का रास्ता अपनाए उन कामों को करे जिन को अल्लाह पसन्द करता है और उन बुराइयों से बचे जिन को अल्लाह नापसन्द करता है। अपने दिल को हसद और कुढ़ से पवित्र व साफ रखता है।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस के ज़ेरे एहतमाम

19वाँ आल इंडिया मुसाबक़ा

हिफ्ज़ व तजवीद और

तफसीर कुरआन करीम

दिनांक 11-12 जून 2022

शनिवार-रविवार को अहले हदीस

कम्लैक्स, डी-254, ओखला, नई

दिल्ली-25 में आयोजित होगा।

रजिस्ट्रेशन की अंतिम तिथि 6 जून 2022 है

एक उम्मीदवार केवल एक ही

श्रेणी में भाग ले सकता है।

फार्म मर्कज़ी जमीअत की वेब साइट

www.ahlehadees.org से

डाउन लोड किया जा सकता है।

ज़रूरी जानकारी और फार्म हासिल करने

लिये के लिये सम्पर्क करें।

मुसाबका हिफ्ज व तजवीद व तफसीरे कुरआन कमेटी

011-23273407 Fax 011-23246613

Email.

Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com

जमाअती खबरें

अध्यक्ष महोदय का वाराणसी, भदोई और मऊनाथ भंजन का दौरा

मर्कज़ी जमीअल अहले हदीस हिन्द के अमीर (अध्यक्ष) महोदय मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने रमज़ान के अवसर पर विभिन्न महत्वपूर्ण जगहों वाराणसी, भदोही, मऊनाथ भंजन, आजमगढ़ और अन्य जगहों का दौरा किया। उन्होंने भदोही में रमज़ान के पहले जुमा को बंगला वाली मस्जिद में खुतबा दिया और शहर के प्रतिष्ठित लोगों से मुलाकात की। इसी तरह वाराणसी के कई मस्जिदों और स्थानों पर प्रवचन और उपदेश दिया और कोरोना काल में निधन कर जाने वालों के बहुत से संबन्धितों के परिवार वालों से शोक व्यक्त किया और हाजी अंसार अहमद सरैयां की इयादत की और यहाँ पर मृतकों के परिवार वालों से शोक व्यक्त किया और कई अहम बीमार हस्तियों से मुलाकात करके उनके लिये दुआएं कीं। अध यापकों के अध्यापक मौलाना अब्दुर्रहमान मुबारकपूरी हफिजहुल्लाह की ज़ियारत की। मौलाना डा० अब्दुल अजीज उबैदुल्लाह रहमानी हफिजहुल्लाह और मौलाना फजले हक़ मदनी हफिजहुल्लाह वगैरह से मुलाकात और जमाअत व जमीअत के विभिन्न मसाइल पर वार्ता हुई। अध्यक्ष महोदय ने इस सफर में डा० रिज़ाउल्लाह मुहम्मद इदरीस रह० के परिवार वालों से मुलाकात और दारूततालीम सूफी पूरा की जामा मस्जिद में ख़िताब किया और मौलाना कुर्रतुल ऐन के परिवार वालों से मुलाक़ात करके हाल चाल मालूम किया। इसी तरह प्रसिद्ध नगर ज्ञान का बगदाद मऊनाथ भंजन का भी संक्षिप्त दौरा किया और मौलाना इकबाल अहमद मुहम्मदी, मौलाना शफीक़ आलम नदवी, मौलाना मजहर आज़मी आदि के साथ वरिष्ठ अध यापक मौलाना मुहम्मद आज़मी की इयादत की और इसके अलावा कई हस्तियों और ओलमा से मुलाकात की। इसके अतिरिक्त मऊ की प्रसिद्ध ज्ञानात्मक हस्ती मौलाना महफूजुर्रहमान हफिज़हुल्लाह से भी मुलाकात की और विभिन्न दीनी, इल्मी, और जमाअत व जमीअत के निर्माण व विकास जैसे मसलों पर विचार विमर्श किया। (संस्था)

फसाद ग्रस्त जगहों का दौरा

१४ अप्रैल २०२२ को महत्वपूर्ण समुदायिक संगठनों की विभिन्न प्रमुख हस्तियों के साथ मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अध्यक्ष महोदय मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने फसाद ग्रस्त क्षेत्र ककरौली राजस्थान का दौरा किया और प्रभावितों से मुलाकात की। इस अवसर पर संयुक्त प्रतिनिधिमण्डल ने एस.डी. एम से भी मुलाक़त की। अध्यक्ष महोदय ने इस अवसर पर अवाम से भाई चारा बनाये रखने, अफवाहा से बचने, आपसी सहयोग और प्रभावितों की ज़्यादा से ज़्यादा मदद करने और सरकार से फसाद ग्रस्त क्षेत्र में नुकसानात की भरपाई की अपील की। हर धर्म के प्रभावितों विशेष रूप से जिन के घर और दुकान जला दिये गये उनसे हमदर्दी व्यकत की और मुसलमानों के साथ जिन कई हिन्दू भाइयों की भी दुकानें जल गई हैं उनसे भी प्रतिनिधिमण्डल ने मिल कर सौहार्द व्यक्त किया।

इस अवसर पर प्रभावितों के पुनर्वास और रिलीफ के सिलसिले में लाभकारी वार्ता हुई। प्रतिनिधिमण्डल ने इस दौरे के दौरान लोगों के दर्द व दुख को महसूस किया और होने वाले नुकसानात पर अफसोस और गम का इज़हार किया और शोक संतप्त लोगों को ढांढस बधाई और प्रतिनिधिमण्डल ने यह भी महसूस किया कि दोनों पक्षों के लोग एक जमाने से मेल जोल के साथ रहते आए हैं और उन को इस फसाद और आपसी दूरी से हार्दिक दुख पहुंचा है और वह कदापि नहीं चाहते कि उनकी राष्ट्रीय एकता और आपसी भाई चारा में भविष्य में इस तरह की कोई घटना पेश आए। प्रतिनिधिमण्डल ने दोनों पक्षों के लोगों के बयानात और हालात के परिप्रेक्ष्य में उनके इस कसद व दुख को शिददत से महसूस किया। इसी तरह दिल्ली में फसाद ग्रस्त एलाका जहांगीर पुरी का भी मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द सहित समुदायिक संगठनों पर आधारित एक प्रतिष्ठित प्रतिनिधिमण्डल ने दौरा किया और साधारण व असाधारण और प्रभावितों से आपसी भाई चारा और अम्न व शान्ति बनाए रखने की अपील की।

❑ ❑ ❑

पाठक गण ध्यान दें

1-जल्द से जल्द बकाया राशि भेज दें। 2-अगर आपको हर महीने की 5 तारीख को पत्रिका न मिले तो इसके बारे में कार्यालय को सूचित करें। न मिलने की सूरत में दूसरी कापी भेजी जायेगी, लेकिन शिकायत करने से पहले अपने नजदीकी डाकखाने पर जानकारी हासिल कर लें। 3-नये खरीदारों से अनुरोध है कि अपने पते में फोन नम्बर अथवा मोबाइल नम्बर और पिन कोड भी लिखें। 4-पुराने खरीदारों से अपील की जाती है कि यदि उनका कोई फोन नम्बर या मोबाइल नम्बर हो तो पोस्ट कार्ड पर या फोन के जरिये अपने खरीदारी नम्बर का हवाला देकर अवश्य भेज दें ताकि जरूरत पड़ने पर उनसे सम्पर्क किय जा सके। 5- मनी आर्डर या हमारे प्रतिनिधियों के माध्यम से पत्रिका के सदस्य बनने वालों को यह सूचित किया जाता है कि रसीद कटवाने के बाद दूसरे महीने ही में पत्रिका भेजी जायेगी। 6- किसी भी तरह की शिकायत के लिये इस नम्बर पर संपर्क करें। 7. नए और पुराने सदस्यों से अुनरोध है कि नक़द पैसा कोरियर और जनरल डाक से न भेजें। इसलाहे समाज के बारे में किसी भी तरह की शिकायत के लिये 3 बजे से 5 बजे तक फून करें। 011-23273407

इस्लाम धर्म अम्न व शान्ति का झण्डावाहक

अबू अदनान सईदुर्रहमान सनाबिली

इस्लाम दया करूणा और अम्न व शान्ति का धर्म है, इस्लाम ने सिसक्ती इन्सानियत को सुख और संतोष की दौलत दी। पीड़ित को उसका अधिकार दिया, अत्याचारी को अत्याचार से रोका, यतीमों, बेवाओं और मोहताजों की देख भाल की, परेशान हाल, अधिकार वंचित, बीमार के साथ हमदर्दी मुहब्बत व सहायता और सांत्वना की शिक्षा दी, लड़ाई झगड़ों से मुक्ति दिलायी। इस्लाम ने एक निर्दोष इन्सान के कत्ल को पूरी मानवता के कत्ल के समान करार दिया है, दूसरों के साथ अच्छा व्यवहार करने का हुक्म दिया है। मुस्लिम और गैर मुस्लिम पड़ोसियों के अधिकार अदा करने और उनके समाजी मामलात में हमदर्दी और शुभचिंतन पर बल दिया है। अत्याचार को हर तरह से हराम करार दिया है। इस्लाम ने अपने अनुयाइयों को इस्लाम के प्रचार की इजाज़त तो दी है लेकिन धर्म के मामले में किसी पर जबरदस्ती करने पर रोक लगा दी है।

इस्लाम अम्न व शान्ति और सुलह समझौते का सबसे बड़ा वाहक है इसका अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि कुरआन ने ऐसे अल्लाह का तसव्वुर पेश किया है जो कृपालू और दयालू है और कुरआन ने ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० का परिचय इन शब्दों में कराया है ''और हमने आपको पूरे संसार के लिये दया आगार बना कर भेजा है'' इस्लाम ने बिना भेदभाव सबसे प्रेम का पाठ सिखाया है क्योंकि यह धर्म प्रेम धर्म है जिसमें कदम कदम पर अल्लाह से प्रेम, ईश्दूत हज़रत मुहम्मद से प्रेम, मुसलमानों से प्रेम, पूरी मानवता से प्रेम यहां तक कि अल्लाह की पूरी सृष्टि से प्रेम की शिक्षा दी गयी है।

इस लेख में उन यथार्थ का उल्लेख किया गया है जिससे मालूम होता है कि इस्लाम धर्म अम्न का वाहक और शान्ति का प्रचारक है और हिंसा, अतिवाद, आतंकवाद का सबसे बड़ा विरोधी है।

अत्याचार निन्दित कार्य है, अल्लाह तआला न्याय को पसन्द करता है और अत्याचार को अप्रिय समझता है क्योंकि अत्याचार अम्न व शान्ति व्यवस्था को भंग कर देता है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''और अल्लाह अत्याचारियों को पसन्द नहीं करता है'' (सूरे आले इमरान-५७)

संसार में अत्याचार करने वाले क्यामत के दिन अल्लाह के प्रकोप के शिकार होंगे। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''और चूंकि तुमने दुनिया में जुल्म किया था, इसीलिये आज तुम्हारी यह बात तुम्हें कोई भायदा नहीं पहुंचाएगी तुम सब अज़ाब में शरीक हो'' (सूरे जुखरूफ ३९)

ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमायाः खबरदार! जिस किसी ने किसी जिम्मी पर अत्याचार किया या उसकी तनकीस (उसके अधिकार में कमी) की या उसकी ताकत से बढ़कर उसे किसी बात का मुकल्लफ किया या उसकी हार्दिक खुशी के बगैर कोई चीज़ ली तो क्यामत के दिन मैं उसकी तरफ से पक्षकार बनूंगा। (अबू दाऊद ३०५२, अल्लामा अलबानी ने इस हदीस को सहीह करार दिया है)

अल्लाह तआला फितना और फसाद फैलाने वालों को कदापि पसन्द नहीं करता है वह अम्न व शान्ति को पसन्द करता है कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''अल्लाह की दी हुयी रोज़ी से खाओ और पियो और ज़मीन में फसाद न करते फिरो''। (सूरे बक़रा ६०)

कुरआन में अल्लाह तआला कहता है ''और कोई आदमी ऐसा होता है जिसकी बात दुनियावी जिन्दगी में आपको पसन्द आ गयी और अल्लाह को अपने दिल की सच्चाई पर गवाह बनाता है हालांकि वह बदतरीन झगड़ालू होता है और वह जब आपके पास से लौटता है तो वह ज़मीन में फसाद फैलाने की कोशिश करता है और खेतों और मवेशियों को हलाक करता है और अल्लाह फसाद को पसन्द नहीं करता है''। (सूरे बकरा २०४-२०५)

इस्लाम धर्म की बुनियाद ही नर्मी और आसानी पर है। इस धर्म में किसी भी तरह की मामूली जबरदस्ती की गुंजाइश नहीं है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है''दीन के मामले में किसी तरह की जबरदस्ती नहीं है''(सूरे बकरा २५६)

कुरआन की इस आयत में अल्लाह ने स्पष्ट रूप से बता दिया है कि किसी भी इन्सान को इस्लाम ध र्म में दाखिल होने के लिये मजबूर नहीं किया जा सकता।

इस्लाम के इतिहासिक अध्ययन करने से यह बात सपष्ट हो जाती है कि जब भी मुसलमान किसी शहर या एलाके में गये तो वहां के लोगों को इस्लाम पर मजबूर नहीं किया बल्कि उन्हें अपने धर्म पर बाकी रहने का अधिकार दिया जिससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि इस्लाम अम्न व शान्ति का झण्डावाहक है।

इस्लाम ने इन्सानी जानों को अत्यंत सम्मान्नीय करार दिया है। इसका अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि उसने इन्सानी जान की हत्या को पूरी मानवता के कत्ल के समान करार दिया है कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है।

''इसी लिये बनी इस्राईल पर जो शरीअत नाजिल की उसमें हमने लिख दिया था कि जो कोई किसी जान को बगैर किसी जान के बदले या बिना मुल्क में फ़साद करने की सजा के मारता है वह गोया तमाम लोगों को कत्ल करता है और जिसने किसी नफ़्स (प्राण) को जीवित रखा तो उसने गोया सब लोगों को जिन्दा रखा है। (सूरे माइदा ३२)

ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया जिस शख्स ने मुआहिद को कत्ल किया वह जन्नत की खुश्बू तक नहीं पायेगा और यकीनन उसकी खुश्बू चालीस साल की दूरी तय करने पर महसूस की जाती है। (बुखारी ३१६६)

ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया इन्सानों के अधिकार के सिलसिले में क्यामत के दिन सबसे पहले नाजायज खून बहाने के बारे में प्रश्न होगा। (सहीह बुखारी ८६६४)

इस्लाम में किसी भी धर्म के ध र्म गुरूओं के कत्ल को हराम करार दिया गया है। अब्दुल्लाह बिन अब्बास बयान करते हैं कि ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया गददारी न करना, धोका न देना, लाशों को अपमानित न करना, बच्चों और पादरियों को कत्ल न करना। (मुसनद अहमद २७३८ मुसन्नफ इब्ने अबी शैबा ३३३२ मुस्नद अबू याला २५४६) अल्लाह ने कुरआन में किसी के पूज्य को गाली देने से रोका है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''और ऐ मुसलमानो!

बाकी पृष्ठ २६ पर

वक़्त बर्बाद न करें

नौशाद अहमद

टेक्नालोजी की रफ्तार ने लोगों के सोचने समझने के अन्दाज़ को बदल दिया है, खबरों की भीड़ में सहीह और गलत खबर का पता लगाना बहुत मुश्किल हो गया है और फिर इन खबरों पर बिना सोचे समझे और अनावश्यक कमेन्ट से एक दूसरी दिशा और दशा पैदा हो जाती है।

शोध की कसौटी पहले जैसी नहीं रही पहले ज्यादातर लोगों का रूझहान शोध और रिसर्च पर रहता था अब पहले जैसी बात नहीं है, अब एक खास मानसिकता पैदा कर दी गई है, ऐसा लगता है कि लोग खबरों की लहरों में बह रहे हैं, एक छोटे से कमेन्ट से मामला कहाँ से कहाँ तक पहुंच जाता है, कुछ लोगा अपना लक्ष्य हासिल करने में कामयाब हो जाते हैं और कुछ लोग अपनी और अपने समुदाय के लिये नुकसान का कारण बन जाते हैं जबकि यह मामला व्यक्तिगत है लेकिन एक गलत कमेन्ट से दूसरे लोग पूरे समुदाय को लक्ष्य बनाने लगते हैं। इसी तरह वक़्त बर्बाद करने का एक बहुत बड़ा माध्यम भी बन गया है। सोशल मीडिया पर ज़रूरत से ज़्यादा व्यस्त रहने से रात रात भर जाग कर नमाज़ जैसे बहुमूल्य इबादत को छोड़ देने का चलन बढ़ता जा रहा है। हमारे समाज में देर तक सोने का रिवाज नहीं था अब यह मर्ज हमारे समाज में घुस आया है दूसरे लोग सुबह-सुबह उठ कर अपने जीवन का लक्ष्य हासिल करने में लग जाते हैं और हमारे बच्चे और हमारे बड़े भी गहरी नींद में पड़े रहते हैं। यह बड़ी दुखद स्थिति है, मस्जिदों के इमामों और खतीबों को इस सिलसिले में सक्रिय रोल निभाना हो गा। लोगों को नमाज़ की अहमियत, कुरआन की तिलावत और बच्चों की तालीम व तर्बियत के बारे में निरन्तरता के साथ जागरूक करना होगा, यह काम पहले स्थानीय स्तर से करना होगा इसके अलावा दीनी पत्रिकाओं को भी ऐसे लेखों का प्रकाशन करना होगा जो हमारे छोटे और बड़ों के जेहन को धार्मिक स्तर पर जागरूक करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकें। सोशल मीडिया वगैरह पर निराधार और अनर्थ कमेन्ट में अपना वक़्त बर्बाद करने के बजाए अपने वक़्त को सकारात्मक कामों में लगाएं। हर व्यक्ति यह ठान ले कि उसे रोज़ाना कम से कम पाँच लोगों से संपर्क करके मस्जिद और शिक्षा से जोड़ना है, नमाज और दीन के दूसरे स्तंभों और शिक्षा और प्रशिक्षण के बारे में लोगों के बीच जागरूकता पैदा करनी है। वक़्त बर्बाद न करे। वक़्त की अहमियत का अन्दाज़ा पवित्र कुरआन की सूरे अस्र से भी किया जा सकता है जिस में अल्लाह ने ज़माने (वक़्त) की क़सम साई है। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः ''ज़माने की क़सम। बेशक इंसान सरतासर नुकसान में है सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाये और नेक अमल किये और (जिन्होंने) आपस में हक़ की वसीयत की और एक दूसरे को सब्र की नसीहत की। (सूरे अस्रः १-३)

बच्चों, गरीबों और गुलामों पर दया

❑ **अबुल कलाम आज़ाद**

हुजूर (हज़रत मुहम्मद) सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बच्चों पर बहुत शफ़क़त और दया फरमाते, आप सफर से वापस आते और लोग स्वागत के लिये निकलते तो बच्चे भी साथ होते और वह मामूल के अनुसार दौड़ कर एक दूसरे से आगे निकल जाने की कोशिश करते। जो पहले पहुंचते आप उन्हें साथ सवारी पर बिठा लेते। रास्ते में मिल जाते तो उन्हें स्वयं सलाम करते और उनसे भी प्यार और शफ़क़त का यही बर्ताव करते।

एक बार एक बहुत ही ग़रीब औरत हज़रत आइशा रज़ियल्लाहो अन्हा के पास आई उसकी दो बच्चियां भी साथ में थीं। इत्तेफ़ाक़ से हज़रत आइशा के पास उस वक्त कुछ न था, एक खुजूर पड़ी थी वह उस औरत को दे दी उसने खुजूर के दो टुकड़े किये और एक एक टुकड़ा दोनों बच्चियों को दे दिया। हज़रत आइशा ने यह वाक़्या रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सुनाया तो फरमाया जिस के दिल में खुदा औलाद की मुहब्बत डाल दे और वह इस मुहब्बत का हक़ अदा करे तो नरक (दोज़ख़) की आग से महफूज़ रहेगा।

अबू ज़र गिफ़ारी रजियल्लाहो तआला अन्हो से आप ने फरमाया था तुम्हारा गुलाम (सेवक) तुम्हारे भाई हैं जो स्वयं खाओ, उन्हें खिलाओ जो खुद पहनो उन्हें पहनाओ, इसलिये इसके बाद से अबू ज़र रजियल्लाहो तआला अन्हो ने अपने गुलाम को हमेशा खाने पहनने वगैरह में अपने बराबर रखा।

गुलामों के लिये ''गुलाम'' का शब्द भी गवारा (पसन्द) न था। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उन्हें गुलाम और लौंडी कह कर न पुकारा करो ''मेरा बच्चा' मेरी बच्ची'' कहा करो। आप के पास जो गुलाम आता, उसे आज़ाद कर देते लेकिन वह आज़ाद होकर भी आप के दया व प्यार की जंजीर में जकड़े रहते। जैद बिन हारिसा के पिता और चचा उनको लेने के लिये आए और हर कीमत चुकाने के लिये तैयार थे। आप पहले ही जैद को आज़ाद कर चुके थे। जाने न जाने का मामला जैद रज़ियल्लाहो तआला अन्हो पर छोड़ दिया उन्होंने जाने से इन्कार कर दिया और आप के दया व कृपा को मां बाप और दूसरे खूनी रिश्तेदार के दया पर वरीयता दी। मुहब्बत और शफक़त के इस सम्मान का सहीह अन्दाज़ा कौन कर सकता है जिसके सामने करीबतरीन खूनी रिश्ते भी बे हक़ीक़त रह गये थे? जैद रज़ियल्लाहो अन्हो के बेटे उसामा रज़ियल्लाहो अन्हो से आप को जितनी मुहब्बत थी वह इसी से स्पष्ट है कि बाज अहम मामलात में उसामा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ही को आप की बारगाह में सिफारिशी बनाया जाता था। एक सहाबी (हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथी) अपने गुलाम को मार रहे थे। पीछे से आवाज़ आई खुदा को तुम पर इससे ज़्यादा शक्ति है सहाबी ने मुड़ कर देखा

तो खुद रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम थे। अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल इसे मैंने अल्लाह की खुशी के लिये आज़ाद कर दिया। फ़रमाया अगर तुम इसे आज़ाद न करते तो जहन्नम की आग तुम्हें छू लेती।

सब से आखिरी वसिय्यतों में से एक वसिय्यत यह थी कि गुलामों और लौंडियों के मामले में खुदा से डरते रहना। एक शख्स ने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल गुलाम के दोष को (कुसूर) कितनी बार मआफ करूं। आप खामूश रहे। जब तीसरी बार यही गुजारिश की तो फ़रमाया हर दिन सत्तर बार।

अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ज़्यादा तर दुआ करते थे कि ऐ अल्लाह मुझे गरीब मिस्कीन रख, मिस्कीन उठा और मिस्कीनों के साथ मेरा हश्र कर। हज़रत आइशा रजियल्लाहो तआला अन्हा ने पूछा ऐसा क्यों? फरमाया इस लिये कि मिस्कीन दौलतमन्दों से पहले जन्नत में जायेंगे फिर फरमाया किसी मिस्कीन को अपने दरवाजे से खाली हाथ न लौटाओ, कुछ न हो तो छोहारे का एक टुकड़ा ही सही, ज़रूर दे दो। आइशा ग़रीबों से मुहब्बत करो, उन्हें अपने से नज़दीक रखो, खुदा भी तुम को अपने से नज़दीक रखेगा।

अवाली में एक बुढ़िया थी, उसे जांबर (स्वस्थ्य होने) की उम्मीद न थी। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जब उसकी वफ़ात हो तो मुझे ज़रूर खबर करना। मैं जनाज़े की नमाज़ पढ़ाऊंगा। इत्तेफाक़ से बुढ़िया का इन्तेक़ाल कुछ रात गये हुआ। सहाबा ने आप को रात के वक़्त उठाना गवारा न किया और बुढ़िया को दफन कर दिया। सुबह के वक़्त आप ने पूछा और पूरी बात मालूम हुई तो इस खातून की क़बर पर जाकर जनाज़े की नमाज़ अदा की।

एक बार एक क़बीला मुसाफिरवार मदीना आया उसकी हालत खस्ता थी, किसी के शरीर पर साबित कपड़ा नहीं था, पांव नंगे थे, खालें बदन पर बंधी हुई थीं। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नज़र मुबारक उन लोगों की बदहाली पर पड़ी तो चेहरे का रंग बदल गया। दुखी हालत में अन्दर गये फिर बाहर आए और बिलाल को अज़ान का हुक्म दिया नमाज़ के बाद एक खुतबे में सबको इन गरीबों की मदद करने पर तैयार किया।

बाक़ी पृष्ठ २३ का

तुम उन लोगों को गालियां न दो जो अल्लाह के अलावा को पुकारते हैं इसलिये कि वह बिना जाने समझे ज्यादती करते हुये अल्लाह को गाली देंगे"। यह हकीकत है कि एक इन्सान जिस की वह उपासना करता है तो वह उससे अथाह मुहब्बत करता है और अपने पूज्य को दुनिया की तमाम चीज़ों के मुकाबले ज्यादा चाहता है इसलिये जब कोई किसी के पूज्य (माबूद) को बुरा भला कहेगा तो दूसरा भी बदले में दूसरे के माबूद को गाली देगा जिससे समाज में अशान्ति होने की शंका है इसी लिये इस्लाम में दूसरों के पूज्यों को बुरा कहने से रोका गया है। ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने एक बार चूटियों के बिल को देखा कि उसे जला दिया गया है तो आपने कहा आग से अजाब देने का अधिकार आग के रब के अलावा किसी के लिये वैध नहीं है। (सुनन अबू दाऊद २६७५ अल्लामा अलबानी ने इस हदीस को सहीह करार दिया है) इस हदीस से आप अन्दाजा लगायें कि जब इस्लाम में एक दुख देने वाले जानदार को आग से जलाना हराम है तो फिर इन्सान को जलाना कैसे जायज और दुरूस्त हो सकता है?